Unit - III

राजस्थान रत्नाकर
Date :
Page No :

402 (Naturopathy and Ayurveda)

Knowledge of नाड़ी विज्ञान

→ नाड़ी विज्ञान से आपको अपना स्वस्थ होने का ज्ञान हो सकता है या आप अस्वस्थ हैं इसके बारे में भी ज्ञात हो जाता है।

→ नाड़ी की धड़कन जीवित होने का एक प्रमाण है। हर प्राणी में नाड़ी होती है।

→ अंगूठे के मूल में जो नाड़ी गति करती है वही जीव के जीवित होने का साक्ष्य है। अर्थात नाड़ी फड़कने से ही मनुष्य जीवित है यह ज्ञात होता है

→ आयुर्वेद के अनुसार तीन प्रकार के दोष :- वात, पित्त, कफ अर्थात शरीर में रहते हैं।

→ अंगुलियों के द्वारा ही हम परीक्षण करते हैं कि वात पित्त और कफ संतुलित है। और शरीर कभी किसी रोग से ग्रसित होता है तो वात-पित्त-कफ असंतुलित हो जाते हैं।

→ त्रिदोष के ज्ञान के लिए अंगूठे के मूल में एक अंगुल छोड़कर नाड़ी पर उंगलियों को रखा जाता है। पहले वात नाड़ी, फिर पित्त नाड़ी और अंत में कफ नाड़ी चलती है।

Scanned by CamScanner

→ तीनों के अपने लक्षण है। वात के गतिमान चंचल होने से पहले वात नाड़ी फड़कती है, पित्त नाड़ी के उष्ण और चपल होने से मध्य में फड़कती है और कफ नाड़ी शीतल और मंद होने से अंत में मालूम पड़ती है।

नाड़ी की गति

→ रक्तहीनता या विशेष कमजोरी में नाड़ी के स्पंदन की संख्या बढ़ जाती है।
एकाएक ज्वर हो जाए, बीमारी रहे काफी दिन, इन्फ्लुएंजा,
→ पुरानी अजीर्ण की बीमारी, खासकर हृदय अवरुद्धता प्रभृति रोगों में नाड़ी की गति धीमी पड़ जाया करती है।

नाड़ी गति प्रकरण

वात में - नाड़ी जोंक और सर्प की भांति वक्रगामिनी होती है।
पित्त के साथ वायु का प्रकोप (प्रधानता के साथ) रहने पर स्फुरण सर्प की गति के समान तीव्र गति से विशेषतः वैद्य की तर्जनी अंगुली पर परिलक्षित होते हैं।
कफ के साथ वायु का प्रकोप होने पर स्फुरण जलौका की गति के समान रुक-रुककर विशेषतः तर्जनी अंगुली को स्पर्श स्थल पर प्रतीत होते हैं।

पित्त में :- पित्त प्रकोप में नाड़ी गौरैया, कौआ और मेढक के समान उछल-उछलकर चलती है। इसमें नाड़ी

के स्फुरण वैद्य की विशेषत: मध्यमा अंगुली में उछल-उछलकर स्पर्श करने की भाँति प्रतीत होते हैं। कफ के साथ पित्त की प्रधानता में मण्डूक की गति होती है।

कफ में :- कफ के प्रकोप में नाड़ी हंस और कबूतर की भाँति मन्द और सरल चलती है। इसमें कफ और वात की शक्ति क्षीण होने से ऐसा होता है। वायु के साथ कफ की प्रधानता में हंस की गति एवं पित्त के तथा कफ की प्रधानता में कबूतर की गति रहती है।

विभिन्न रोगों में नाड़ी की गति

नाड़ी कुछ गरम, अत्यंत कर्कश और रूक्ष भाव से प्रवाहित होती है। वात-श्लेष्म ज्वर में यदि वायु की अधिकता हो और नाड़ी की गति पित्तज्वर के सदृश हो तो रोगी को शैथिल्य का अनुभव होता है। पित्त-कफ ज्वर में नाड़ी सूक्ष्म, शीतल और जड़ होती है।

ज्वर :- त्रिदोष ज्वर की नाड़ी में प्राय: तीनों ही दोषों के लक्षण होते हैं।

अतिसार :- अतिसार रोग में नाड़ी की गति गर्मी में जोंक की समान मन्द और निस्तेज होती है।
गति

Scanned by CamScanner

राजस्थान रत्नाकर
Date :
Page No :

अजीर्ण :- अजीर्ण हो जाने पर नाड़ी क्षीण और मृदु गति की हो जाती है

पेट में कीड़े :- इसमें नाड़ी की विविध गतियाँ होती है। कभी नाड़ी स्थिर होती, कभी तीव्र कभी स्पंदित और कभी स्पंदन का अनुभव ही नहीं होता।

पीलिया :- पाण्डु रोग में नाड़ी दुर्बल और स्थिर होती है।
उल्टी :- नाड़ी कठोर और ज्वरयुक्त होती है।

मूर्च्छा :- नाड़ी सूक्ष्म गति से चलती है।

एसीडिटी :- इसमें नाड़ी काठिन्य और मृदुगामिनी होती है।

Tuberculosis :- इसमें नाड़ी स्वभाव में स्थिर न रहकर विविध गतियों से चलती है।

कास और श्वास :- कास में नाड़ी सूक्ष्म, स्थिर तथा मृदुगामिनी होती है और श्वास रोग में बड़े वेग से चलती है।

Paralysis :- इसमें नाड़ी विशुद्ध रहती है तथा वातधिक्य का अनुभव होता है।

हृदय रोग :- इसमें नाड़ी कर्कश, कृश, द्रुतगामिनी और निम्नमध्यगामिनी होती है।

Scanned by CamScanner

Spleen का रोग ; इसमें नाड़ी सूक्ष्म, शुष्क, गठीली, शी... एवं मृदुगति विशिष्ट होती है।

गुल्म :- इस रोग में नाड़ी कम्पित होकर बड़े वेग से कबूतर की चाल चलती है।

कुष्ठ :- इस रोग में नाड़ी संकुचित भाव से स्पंदित होती है कभी-कभी तो उसकी चाल का अनुभव ही नहीं होता है।

भगन्दर :- इस रोग में नाड़ी कृश और अत्यंत पिच्छिल जात होती है।

सर्पदंश और विषपान :- सांप काट लेने से या विष पीने पर नाड़ी अत्यंत वेग से चलती है।

नाड़ी परीक्षा की आवश्यकता क्यों ?

तीनों दोषों के विकार से उत्पन्न त्रिदोष-जनित है, यह जाना जाता है। साथ ही साथ यह भी जाना जाता है कि वह रोग साध्य है या असाध्य। इन सारी बातों का निर्णय नाड़ी परीक्षण द्वारा हो जाता है।

उपरोक्त प्रकार से नाड़ीयों से रोग का परीक्षण किया जाता है और उससे रोग की स्थिति का पता लगा लेते हैं और इसको ठीक करने के लिए आयुर्वेद आदि चिकित्सा पद्धति का सहयोग लिया जाता है।

Thanks.

Scanned by CamScanner